पर उसने अपना अधिकार कर लिया और उसे अपने सूबेदार के आधीन कर दिया। तत्पश्चात् उसने सिन्ध में स्थित कच्छ पर आक्रमण किया। वहाँ की विश्वासघाती रानी से मिलकर उसने कच्छ के शासक की हत्या करा दी तथा उसके राज्य पर अपना अधिकार कर लिया।

अन्हिलवाड़ा पर आक्रमण

मुहम्मद का दूसरा आक्रमण अन्हिलवाड़ा के राजा भीमदेव पर हुआ। परन्तु अन्हिलवाड़ा के वीर एवं निर्भीक शासक ने ११७५ ई० में मुहम्मद को भयंकर पराजय दी और उसे अपने देश से बाहर खदेड़ दिया।

पंजाब पर आक्रमण

अन्हिलवाड़ा में हारने के बाद मुहम्मद गोरी ने अपनी योजना बदल दी और पंजाब के भागों से भारत में पहुँचने का निश्चय किया। फलतः ११७६ ई० में उसने पेशावर पर आक्रमण किया और उस पर अपना अधिकार कर लिया। दो वर्ष के बाद उसने लाहौर पर आक्रमण किया परन्तु कुछ कारणवश उसने पंजाब के शासक सुखदेव मलिक के साथ सन्धि कर ली। ११८५ ई० में मुहम्मद गोरी ने पुनः पंजाब पर आक्रमण किया और पूर्णरूप से उसको सफलता मिली। इस प्रकार सम्पूर्ण पंजाब पर उसका प्रभुत्व स्थापित हो गया।

तराइन का प्रथम युद्ध

मुलतान तथा पंजाब पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के बाद मुहम्मद ने भारत के सीमावर्ती नगर सरहिन्द, भटिण्डा पर आक्रमण कर इनको हस्तगत कर लिया। मुहम्मद के आगमन की सूचना से समस्त भारतीय राज्यों में खलबली मच गई। राजपूतों ने आक्रमणकारी का सामना करने के लिए दिल्ली तथा अजमेर के शासकों, शौर्य एवं पराक्रम के लिए विख्यात पृथ्वीराज के नेतृत्व में एक संघ बनाया और ११९१ ई० में थानेश्वर से १४ मील दूर स्थित तराइन नामक स्थान पर मुसलमान सेना का सामना किया। कन्नौज का राठौर नरेश जयचन्द ही केवल इस संघ में सम्मिलित नहीं हुआ था। युद्ध में मुहम्मद गोरी बुरी तरह पराजित हुआ।

तराइन का द्वितीय युद्ध (११९२ ई०)

मुहम्मद गोरी अपनी पराजय को भूल न सका और इस हार का राजपूत राजाओं से प्रतिशोध लेने के लिए एक विशाल सेना लेकर दूसरे वर्ष ही उसने भारत की ओर प्रस्थान कर दिया। तराइन के मैदान में फिर मुसलमानों तथा राजपूतों में घमासान युद्ध हुआ। राजपूतों ने अत्यन्त वीरता से युद्ध किया, परन्तु मुहम्मद की युद्ध-निपुणता के आगे उन्हें मुँह की खानी पड़ी और उसके अश्वारोहियों ने "हिन्दू दल में मृत्यु तथा विनाश को फैला दिया।" पृथ्वीराज पराजित हुआ। वह पकड़ा गया और मारा गया। चन्द बरदाई के कथनानुसार पृथ्वीराज बन्दी बनाकर गजनी ले जाया गया और वहाँ उसका वध किया गया।

कन्नौज की विजय

दिल्ली और अजमेर पर अधिकार करने के उपरान्त मुहम्मद गोरी कन्नौज तथा बनारस के राजा जयचन्द को पराजित करने के लिए बढ़ा। जयचन्द ने यमुना नदी के किनारे चन्दावर नामक स्थान पर मुहम्मद गोरी का सामना किया। उसने

प्रश्न ३४—मुहम्मद गोरी कौन था ? उसकी भारतीय विजयों का वर्णन करो ।

अथवा

मुहम्मद गोरी के भारतीय आक्रमणों का वर्णन कीजिये तथा महमूद गजनवी से इसकी तुलना कीजिये । (१९५९, १९६४)

सुल्तान महमूद की मृत्यु के बाद गजनी का पतन आरम्भ हो गया । गोर राज्य ने जो अब तक गजनी की अधीनता में था, इस स्थिति का लाभ उठाया । इसी समय गजनी के सुल्तान बहराम के द्वारा गोर राजकुमार कुतुबुद्दीन का वध दोनों राज्यों के शासक वंशों में संघर्ष को और बढ़ावा दिया । इससे कुपित होकर कुतुबुद्दीन के भाई सैफुद्दीन ने गजनी पर आक्रमण किया और बहराम को परास्त किया । झगड़ा बढ़ता गया । सैफुद्दीन के छोटे भाई अलाउद्दीन ने गजनी को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया । उसके पश्चात् उसका चचेरा भाई गयासुद्दीन गोर की गद्दी पर बैठा । उसने गजनी पर पुनः अधिकार कर लिया और अपने भाई सुईजुद्दीन अथवा मुहम्मद गोरी को गजनी का शासक नियुक्त किया । मुहम्मद ने अपने भाई के साथ अच्छा सम्बन्ध कायम रक्खा और पूर्ण रूप से उसके प्रति वफादार रहा ।

मुहम्मद गोरी का भारत पर आक्रमण

मुहम्मद गोरी ने गजनी में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के उपरान्त भारत की ओर ध्यान दिया । वह ११७५ ई० से १२०५ ई० तक भारत पर निरन्तर आक्रमण करता रहा ।

मुल्तान तथा कच्छ पर आक्रमण

मुहम्मद गोरी का पहला आक्रमण ११७५ ई० में मुल्तान पर हुआ । नगर